

॥ श्रीः ॥

श्रीगुरुदेव न. शर्मा
कलकत्ता,
१९०८-१९०९

कल्याणकविग्रहित

सुगमरागमाला ।

एक संग्रह

भालचंद्रशर्मानि

भार्यभूतना संश्लेषणें कल्याणकर कविद्वय कृत है.

मात्र: १८०० - २००० - १९०८

(सर्व मद्रास प्रकाशित है.)

सूचना.

हा ईश्वरी इम्प्रेसिभिलिटी एण्ड श्रीकाशीमेंसीरस्मागाने
आ० सेकेटरी श्री० जगन्नाथनर्मा चान्दवतुन आम्बेडकर मिश्रकी
स्वावरुद भाणी त्पाये फार आभारी बाहो.

प्रकाशक.

Printed at the Arya-Bhandar Press, Poona, City,
by Anant Vinayak Patwardhan,

and

Published by Bhadracharya Shrinani Sakshinagar, P. O. S. T. Office,
at 2, Malabar Hill, Bombay.

४४०१४

सुगमरागमाला.

श्रीनिवासाय नमः

अथ श्रीनिवासाय नमः प्रथममंडलं लिख्यते ।

श्रीः ।

पर्व विषय संघार शुनि मन्थन पंचम ज्ञान ।
वैभवं बहुवि विषयद स्वर सारो फडे पयान ॥ १ ॥
स्वर कुंवर रूप श्रीकिला हाक केकि अरु येक ।
इको स्वरके अंकोले मकर चये एक पृष्ठ ॥ २ ॥
सा वि न व व व नि स्वरमंडी भारी नदी सख्य ।
सायन मुख सैनन एक साय दि साय अन्त ॥ ३ ॥
कोप भेद गमि अलग श्री लयन दांर विर यान ॥ (४) ॥
जरी सुपे मुख सुपे लघु करन संगीत ययान ॥ ५ ॥
इत्यादिक स्वर भेद ई सायन मुख विचार ।
ए सर्वे नाले आलापने वेनि पुस्त स्वर भारी ॥ ५ ॥

अथ आन्दाय विषयी ।

कनरी ईनाया करी ईननदः आ नाम ।
पादल स्वरति सुन केदु अवरुनदु गीत विषयी साय ॥ ६ ॥
इति प्रथममंडलसंज्ञः ।

अथ श्रीनिवासानिहीनपर्वसंज्ञः ।

पारि स्वरतिरे समको तीन विषयकी अंकी ।
ई गंधारकी पारिरे मन्थन स्वरके भारी ॥ ७ ॥
४००१४

बारी बहुरि वनप रसे पैसल तीन पथान ।

ई निषादये बसनी बार्डलोई जान ॥ ८ ॥

अथ पत्नीदि वामम्बरम्ब द्वारिधरति स्वरतिनाम वर्णन ।

दीनार्थला सुदि श्री कल्या नाम ॥ १ ॥

बारि स्वरति ए पनेके करे कल्या बलान ॥ २ ॥

पीना और महीन सुदि करि रसि महीन ।

नल म्बरति कामने रिषम स्वरति ए तीन ॥ १० ॥

रानी सुनी द्वितीय पुनी नाम कोहिनी अदि ।

दोई स्वरति मंधारकी नामत कोकिर बादि ॥ ११ ॥

नाम कोमला कोपिला सुहा वंशक रूप ।

मध्यम स्वरति बारि ए रानी परम अस्तु ॥ १२ ॥

अंभा बहुरि तति सुनि सुनी सुरंगा नाम ।

और विभंगत गोपी ई वनप स्वरति ललाह ॥ १३ ॥

सुहा एक सुहा द्वितीय तुलिय मलिहा संव ।

वंशक सुनि वन सरतिन वंदन वन सुर्ग ॥ १४ ॥

भुंजी बहुरि अमयी ई स्वरति निषादकी दोष ।

बाईलो ए आनिरे गादि सुनी सु दोष ॥ १५ ॥

एति वार्डलकरपुलिनाम द्वितीयवर्णन ।

अथ आयनाम ।

अदरा द्विक सुहा बहुरि तारावीना नाम ।

वामन ही आदि सुनी पकवाकरकी विषाय ॥ १६ ॥

अदरा लखी अदरने सुहा वंदन स्थान ।

वाया होव कयाअने वरमल नाद सुमान ॥ १७ ॥

एति सुवीनामम्बरवर्णन सुवीवर्णन ।

अथ एकविंशत्युर्ध्वना स्थान नाम ।

सुर्ध्वना की वसत ई नई स्वरको विषाय ।

वीन तीन स्वर मति रो अथ बसनी अथ नाम ॥ १८ ॥

अथ पत्नीदि वामम्बर सुर्ध्वना नाम कथने ।

आपोदनी निनेदानी श्री कन्दोदनी नाम ।

पने सुर्ध्वना तीन ए उपरत स्वर विषाय ॥ १९ ॥

दीर्घो पक दीघा दुलिय स्वैयी तुलिय बलान ।

कहत सुर्ध्वना रिषादकी नेदु कथानि कानि ॥ २० ॥

ई आन्दे बलानि सुनि मालती सुलपान ।

उपनन ई वंशरते तीन सुर्ध्वना नाम ॥ २१ ॥

विशामिनी अर कामिनी अनामिनी अनुप ।

मध्यमने कलन मला तीन सुर्ध्वना नाम ॥ २२ ॥

और कोमलीनिर्गनी जननी नाम ललाह ।

वंशमकी ए सुर्ध्वना मिरया परम सुमान ॥ २३ ॥

आधारिनी विशारिनी विशामिनी विषाती ।

वंशक स्वरकी सुर्ध्वना कहत मन्धारि मन्धारि ॥ २४ ॥

लला संवेधी बहुरि दोषी कही बसनी ।

एतिह कल्याण सुमाण वन स्वर निषादकी अदि ॥ २५ ॥

एति चतुर्वर्णनः ।

अथ द्वाविंशतिनामकथने ।

अनारिन रसहीन अर तानहीन स्वर वान ।

वदन बीर गांधी विने गांधी दुल्यती स्थान ॥ २६ ॥

सुनि कयाअर वंशरर अर्थे न कानि जोई ।

अथ स्वर वेद न लखी सुनी वासी अथ दुल दोई ॥ २७ ॥

ए दस दोष निवारिणीं वरने सहित विद्याम ।
सप्तविंश युग अब हरी सुनी राई भद्रुदाग ॥ २८ ॥
एहि संवत्सरकः ।

अथ राघवस्य शर्मभोगोत्पत्त्यादिकथनं ॥

भद्रा श्री अविद्याय पुनि सुप्रति रूप रस ज्ञान ।
दया वैशि श्री देव सुख योग चाह परमान ॥ २९ ॥
पीति निनीत वनीत पुनि बुद्धि इतरव विवेक ।
निर्भ भक्ति संयोग पुनि परिषे भोग अवेक ॥ ३० ॥
शुद्धि बुद्धि भोगा रसिक सुन विद्यानि सरेन ।
मन सख्य आनंदपूत पूने गुणानि समेत ॥ ३१ ॥
एहि संवत्सरकः ।

अथ शर्मभोगोत्पत्त्यादिकं ।

राघवश्रीका श्रीरई उत्तम मध्यम नीच ।
ये वरने पदुभाति ई राघवश्रीके नीच ॥ ३२ ॥

अथ उत्तमरागश्रीकात्पत्त्यादिकं ।

सखास्यय यद् वैशिष्टी उचित सवि वैशारि ।
पान सुगंध लभे उचित द्विज-सवमान सुचारि ॥ ३३ ॥
विज समान जन समस्तिये वीर्ये पवन विवेक ।
इह विषयो सुचना करे सुनी यक एक ॥ ३४ ॥
परी चार ई वैशिके श्री सख्य सुनि राग ।
कष्ट सुनी मसख करी बसुत न वैरे लाल ॥ ३५ ॥
विजसमान विज पान करी कष्टु विपरी भाव ।
राघवस्य हीने वारस मे आनन ही भाव ॥ ३६ ॥

उत्तम करी सुनिद सवि सखेय मयसुखान ।
श्री भव सखा मसख नव पुने एत सुख मान ॥ ३७ ॥
राग होय पतिपुर्न जब तरे गुणिको पेरि ।
जो क्यार तो देव अह कष्ट इनाम पुनि देहि ॥ ३८ ॥

अथ मध्यमश्रीका तक्षणाकथनं ।

सखा सहित वैरे पुने सहित सिद्धास विवेक ।
बाल मान सुख करि सुनी विद्याकरे एक एक ॥ ३९ ॥

अथ नीचश्रीका तक्षणाकथनं ।

मुनी राग सुनि साव ही सख्य कथन व विद्यार ।
हरी कोठ कोठ लरे कोठ देव निवार ॥ ४० ॥

अथ शिषियगुनी तक्षणाकथनं ।

गायक नीच उवासी उत्तम मध्यम नीच ।
अपर दोष सुख सहित पुनिपन इनके नीच ॥ ४१ ॥

उत्तम सप्तविधि पूर्ये ई कथन कष्टु विधि हीन ।
कष्टु माने कष्टु भाहिना नीच वरी २ नीच ॥ ४२ ॥

एहि संवत्सरकः ।

अथ गुणीश्रीका तक्षणां ।

रसिक शोका तीन ई विगुण भंग अविचार ।
अथा भाग सुनके सदा सुनन विचारो विचार ॥ ४३ ॥

सप्तविध रातल तवारी जो उत्तरी संचार ।
जे वैरागि रसिक अह विपरीं शिषिय वचार ॥ ४४ ॥

अथ गुणविरतश्रीका तक्षणां ।

प्रथम मलयसुख ।

सख अक्षर भवायक लभे स्वामि वषाम विद्याम ।
ईदपन श्रीका सदा सुनि सार्ये पदुखान ॥ ४५ ॥

द्वितीय प्रयोगसूत्र ।

रस रास्य मय गात्रेण तुल्यं भाव नपराय ।
गात्रे तुले ममेव विद्ये इह उपामय सुभाष ॥ ४६ ॥

तुल्योप उपामयसूत्र ।

उपरवरनकारन मुगति भक्ति विरक्त स्वरुप ।
करे वाप सुनि मुननयो बहु विभेभर कव ॥ ४७ ॥

अथ विगुर्परिशामकभेदा लक्षणं ।

अथक कलवसूत्र ।

इम प्रेष पोरादि अवि मरै विरंजन देव ।
अईत भाव गात्रे तुने मल विचारी मेव ॥ ४८ ॥

अथ गजवसूत्र ।

सामनीति पाहन केरे कल वदाम सुभाषि ।
वेईतनापक सुन गने सुने और कइ गादि ॥ ४९ ॥

अथ कामसूत्र ।

गौर्य रास्य केरे कण्ड परिरोपिन जो होय ।
गात्रे सुने करै मदा रक्षिक कामसी सोय ॥ ५० ॥

अथ विगुर्धनिरत विचर्चाभेदा लक्षणं ।

बांछा भूरन होय जो करै सुनें हरिनम ।
सो सालिक विषां पने मन नो बहुति कवाम ॥ ५१ ॥

अथकद अथकद रूपकद कलवेकलकद गादि ।
लोक मतिहा रिज सुने गात्रे दिन थी राति ॥ ५२ ॥

विषय भेदके वे करै हरिकुल काशी देदि ।
निगलर्मनिवे सोइ मुन गात्रे पुनि सुनि केदि ॥ ५३ ॥

अथ विविधरामानुजनिबर्णनं ।

विधा विधा मति मुगमके भेदु कइ वंछादि ।
करे वापि नव गात्रि मय कही गय विस्वामि ॥ ५४ ॥

सोय ही भाषिको वेद ही गणनानिवे गादि ।
काली मय विस्वामि सुनि कइत गादि ॥ ५५ ॥

कल वदामाके हे पुनि संकिरण वेदु ।
गात्रे जो वेदु निजे ज्ञान के मय देदु ॥ ५६ ॥

द्विभिदि कइ द्वैभिदि बहुति कालेपदुको ज्ञान ।
द्विभिदि भाव सोईरकदु अथको कही कलाम ॥ ५७ ॥

अथ द्विभिदि भुदगात्रि वेदवर्णनं ।

एक सुद दुको तथा मराकदुद वर गात्रि ।
गात्रो वेद कही वरति है दोक निजे गात्रि ॥ ५८ ॥

अथ वृथमभुदगात्रि लक्षणं ।

परिकण्डु जो रेण जो विषय सोय जहि होय ।
कोकक वर विदुति हि विजे सुद जात्रि है सोय ॥ ५९ ॥

विदुति कदव है गात्रो और मेरलो होय ।
गादिहे अस्वामो दुर्गदुनि निजे विदि अत्र ॥ ६० ॥

पने वर साकेको सुन मगद को वेदु ।
गाण्डु कतुर निचारीके स्वर्गभिदि विचरेद ॥ ६१ ॥

कद पुत्रके आदि है सोय सुदद सुद ।
सो रानको गात्रे सुने वपने मय विन्द ॥ ६२ ॥

द्वितीय सुदगात्रि लक्षणं ।

निजे व विदुति स्वर सुगति पुन आपनी होय ।
विदि सायेय अथ कानका मराकदुद गुण सोयके ६३ ॥

अथ कान्दरादि कानगम भुद मदाभुद लक्षण वर्णनं ।
संशुभाये कति ५ लक्षणानी पादि ।

केटी मीरी पुकी थी कान्दरा कदादि ॥ ६४ ॥
नद कदाय सायेय एक ही सुद दे लीन ।

भोक्ष्य पास्य वाप कति मानत सुनी मरीन ॥ ६५ ॥

अथ द्विविध सारलोक लक्षणम् ।

सारलोकं द्वै भागि ई वरुण नादि निःशुक्त ।
स्वरसारलोकं वषट् ई दुर्धर राग सारलोक ॥ ६६ ॥
स्वरसारलोकं शुद्ध वे गनन सारलोकं गौत ।
अभि वगट् ईरिरी सदा विदुनि स्वर संयोग ॥ ६७ ॥

अथ रामसारलोक लक्षणम् ।

औरुणं लघुवा मिले और ठौर हू आव ।
सादि रामसारलोक कदि वरुण नाद शुभान ॥ ६८ ॥
धीराम जैसे सदा ई गौरुके री ।
देसादि दीनक रागै और रंके संय ॥ ६९ ॥

अथ श्रीगामादि चतुर्धा सारलोक नाम ॥

मुनहु चतुर्धा नाम अथ ते सारलोक कदा दि ।
बरो गे जे जे मिलै विन विन राग विधादि ॥ ७० ॥
औरुण गौरी वरुण दीनक भीमवसर्वादि ।
पेय सारार वरुण सुवे वरी वरुण विरुणदि ॥ ७१ ॥
उमे तीन सारलोक ई संवर्गण ई तीन ।
से आगे कदिई वरुण वि (?) ई चतुर वरुण ॥ ७२ ॥
मुनहु चतुर्धा सारलोक ई लुगानेनी वाय ।
वरुण विरुण वरुणै शुभिनि वरुणै वरु वरुण ॥ ७३ ॥
विधाय सलिवके रंगै लखिगदि रंग वरुण ।
सौरं केदार वरुण सुवे वृष वरुण ॥ ७४ ॥
वनारिरी सुवे शुक वरुण वरुण कदादि ।
सारी और विरुणवसर्वादि रंग कान्हा आदि ॥ ७५ ॥
गौरी गौड वरुण कदि रेका मुनवी रंग ।
देव वरुणनी रंगै वरुणी से संय ॥ ७६ ॥

विभुर्गौरीण

अथ द्विविध त्रिकोण लक्षणम् ।

लघुमंडोरण वरुणै सारलोकं गण ।
गादि वृषी वरुण गृध्र गृध्रि गनेन विरेक ॥ ७७ ॥
अथ लघुमंडोरण लक्षणम् ।
गादि शुद्ध ई विरे वी लघु संवोरण आदि ।
जे मिली वीरी वरुण गेण गण कदादि ॥ ७८ ॥

अथ वेरुवादि पंच नाम ।

वेरुव वीरी कलण मिले वरुण वरुण ।
मिनि वीरी जे वरुण वरुणवैरुण शुभान ॥ ७९ ॥
मिनि केदार वरुण वरुण गेण वरुण ।
सारे और वरुण मिले वरुण वरुण मुनवरे ॥ ८० ॥
मन्ववराण वरुण विनि वीरी और वरुण ।
महामंडोरण अथ लुगे मुनवादि विरुण ॥ ८१ ॥

अथ चतुर्विध महामंडोरण वर्णनम् ।

महामंडोरण अथ लुगे चतुर्विध कदा वरुण ।
ई ई विधि एक रंगे नाम वरुणै परिवादि ॥ ८२ ॥
ई मुनवा ई मन्वा ई मन्वा व वीर ।
जमन नाम वरुण पया लुगे गे मन् वीर ॥ ८३ ॥

अथ लघुमुग्धा ।

मिने शुद्ध सारलोकै एक वरुण गेण ।
लघुमुग्धा संवर्गं विदि कदि शुभाने वरुण ॥ ८४ ॥

अथ लघुमुग्धा अष्टावादि पंच नाम ।

मिने कान्हा सारुण नाम वरुण वरुण ।
मिनि वीरी अथ मुनवी नाम वृषी वीर ॥ ८५ ॥

दोरी और पनासिरी मिलत पानी नाम ।
 सारंग और मोकने मोगसाली नाम ॥ ८६ ॥
 मित रेवा भी तुमरी नाम मुनेक होत ।
 तुम्हुरमा इजलीक जो अब बनली ही सोई ॥ ८७ ॥
 अथ तुम्हुरमा मियथारि एकलीक नाम ।
 होत पैरनी मिलत है दोरी और पनासि ।
 सारंगली मिल हेवि भी तुमरी कहे विषरि ॥ ८८ ॥
 केर मुगरे कालकी मिलि मुगकली होत ।
 इयाम कलरी संगले म्यामवारी सोई ॥ ८९ ॥
 मोगसाली होत है मिलि संग मोगसाल ।
 मिलि पनासिरी कानरा रिधम नाम प्रकात ॥ ९० ॥
 मार कानराके मिले कानरकात सारंग ।
 गौरी औ पर रामले देरी कवी कल्प ॥ ९१ ॥
 दोरी देसीके मिले देसीदेरी होत ।
 मिलि देरी औ पुरिया देसीपुरिया सोई ॥ ९२ ॥
 हे अकलीक मयनी मिलि देरी पेशात ।
 सारंग मियानम मिलेने होत पुरिया नाम ॥ ९३ ॥
 हे पदीकली मिलवली मिलि राग सारंग ।
 पैलि कालि सोरी औ जेन भिरीके रंग ॥ ९४ ॥
 होत पुरिया कानरा करिष सारंग नाम ।
 मिले करदुलीकालरा करिषे सारंग नाम ॥ ९५ ॥
 संग इमन केदारके होत इमनकेदार ।
 मिलि केदार कलपान मो केदारकलपान विषार ॥ ९६ ॥
 मार केदार मिले सो विषारग नाम ।
 सारंग और दुरनी मिले देवमिदली नाम ॥ ९७ ॥
 सारंग औ मजेके मिले सारंगकात सारंग ।
 मार मुनी विषारी के तुमर तुमर नर पूर ॥ ९८ ॥

मंग तुम्हुर मंगलीनी औ होत सानिनी कलान ।
 मोई तुम्हुरमा बहुरि मुने मारमा नाम ॥ ९९ ॥
 अथ लघुमुग नामका लक्षण ।
 मिले जाति सारंग ई कल्प सारंग होत ।
 तुमिष मिलत सारंग भी मंगीरगते होत ॥ १०० ॥
 अथ लघुमासमा विषडगा नाम एक गमिरी कथन ।
 मिले भीरग पनासिरी मार विषारग होत ।
 लघु मासमा पनासिरी पल तुमले सोव ॥ १०१ ॥
 अथ तुम्हुर मासमा कल्पामासि पंचतुल नाम कथन ।
 मिले पनासिरी केरली नाम लेन कल्पान ।
 विषारक भी कल्पानले तुमली परिषान ॥ १०२ ॥
 देसकवर औ दुरी मिलत कल्पका होत ।
 अलिष बनगी संगने कलि कलत मय सोव ॥ १०३ ॥
 पंचम ललिष मियानले पंचमललिष कल्प ।
 पनासिरी पंचम मिले सारंगिरी तुममर ॥ १०४ ॥
 मित पुरिया पनासिरी सोई कलत नाम ।
 केदार औ जाते केदारकात विषार ॥ १०५ ॥
 मय मारकलि मिले मधुमासमि अकल ।
 सोरत सारंगे मधु मय मियुगकल ॥ १०६ ॥
 मिलत विषारग मीरले हे कलकेर मय ।
 मिलि पनासिरी पुरिया भीरपथारि कल्प ॥ १०७ ॥
 देसकवर औ केरली मिलि भीरपथारी होत ।
 विषारक मंगरामरगते केरसिरी हे सोव ॥ १०८ ॥
 मारना और विषारक मिले मुकते पलात ।
 मुगगाई हे नाम भवि मुगगाईको मार ॥ १०९ ॥

अथ लघुनामना कृतिभिरादि उपसिंहिताम वर्णनं ।
 पद्या श्री मेरीराम संग इत् दुर्गि संग अमोल ॥
 राग रागदुर्गे मिले वरुण श्री संग ॥ ११० ॥
 अनेपाल मिलि सुरिया पराज कृतिरि संग ।
 निचम वगारीने भयो फलरुण संग विगत ॥ १११ ॥
 मिल वसंत हिंदोल राग केरम संग ॥ ११२ ॥
 कृतिरि श्री रागम मिले फलरुण संग राग ॥ ११३ ॥
 पद्या श्री कल्याण मिलि भगवतुंगे संग ।
 रागकली चुवाली मिलि वरुगे मिले संग ॥ ११४ ॥
 राग श्री खेति संग फलरुण संग ।
 मिल असावरी सुरिया वरुण नाम ई संग ॥ ११५ ॥
 श्याम वगारी हीने असावरी संग ।
 मिलि विद्यावरा रागकली पंचवली सुरंग ॥ ११६ ॥
 अनेपाल श्री वीरसे वरुगे सुरिया नाभी ।
 देवकली संगारने सोरुगी वरुगे विगत ॥ ११७ ॥
 श्याम रागेके मिलरुगी रागकली संग पद्या ।
 एक रूप ई शिवनी श्रींग मिलुदा राग ॥ ११८ ॥
 वैरव श्री वगारि मिलि संग नाम संग ।
 रागकली वेगाल मिलि श्याम ई अनेपाल ॥ ११९ ॥
 वैर वगारी कल्याणने संग अनेपाल ।
 श्याम श्री कल्याणने श्री नाम संग ॥ १२० ॥
 मिलि कामोद कल्याणने ई कामोद कल्याण ।
 श्याम संग कल्याण मिलि राग वरुण संग ॥ १२० ॥
 निचम श्री संगारने अनेपाल सुरि वेरु ।
 संग मिले वेगाल पराज सुद वरु वेरु ॥ १२१ ॥
 रागा संग हींग अरु सुद रागके संग ।
 कापानाद वरुण संग वरुगे वरुण संग ॥ १२२ ॥

कापानाद दोर मिलन अहिरनाद ई संग ।
 हींग नाद ई वरुगे मिलि कामोदनाद संग संग ॥ १२३ ॥
 मिलि संकराभाज श्री सुद वरुगे संग ।
 वरुण रागिनी संग श्री मालकीवरी नाम ॥ १२४ ॥
 रंग वरुण संग ई वरुगे वरुण संग ।
 सीवारनी विचम मिले संकोपी संग संग ॥ १२५ ॥
 वैरी श्री वरुण मिलि संग वरुगी संग ।
 रंग वरुण संग नाम वरुगी मरुणनाद श्री संग ॥ १२६ ॥
 अथ मुक्त रागना हिंदोलारि अनुपेयनि नाम
 वर्णनं ।

सीवारनी लखिन वरुगी वैरम मिलि हिंदोल ।
 वीरी सुनरी मालवा संग वरुण अमोल ॥ १२७ ॥
 वीरी श्याम श्री सुरिया मिलि संदसिरी संग ।
 वैरसिरी रंग सुदने वरुगे सानुगी संग ॥ १२८ ॥
 वैरसिरी हीने मिलि फलरुण संग ।
 रंग वैरव वेगाल संग वरुण संग संग ॥ १२९ ॥
 असावरी मिलि सिपुरा रोटी श्री वरुण ।
 अनेपाल वेगाल श्री लखिन श्याम परका ॥ १३० ॥
 संग विद्यावरा वीरुगे संग विद्यावरी संग ।
 वरुण कापानाद संकराभाज वेगाल संग ॥ १३१ ॥
 रंग संग कामोद संग मिले वरुगे संग ।
 कापानाद वरुण वरुगे संग संग संग ॥ १३२ ॥
 रंग संग श्रीराम श्री वैरव कापानाद संग ।
 देवकार वीरी लखिन मिलन वरु संग ॥ १३३ ॥
 देवकार श्री सुनरी वरुगे कल्याण संग ।
 रंग अहिरि रागिनी अरु वरुण संग ॥ १३४ ॥

साधना केदार वदरि इमन संग लेखि ।
 देवशिरी पर भैरवी संग अही गीषी ॥ १३५ ॥
 बिलि काकरा कालिगो इमन होई निधि संग ।
 होई नाम कालेपुरी सुनन बरि बहु रंग ॥ १३६ ॥
 नर हिरौल करिगहि बिले मलयमा नाम ।
 और सुनो विस्वासां ले ले ई सुन पाव ॥ १३७ ॥
 होहि बनाधी सिखाई असावरी बिलि होइ ।
 गहीयो संभार कही गावन ई सब कोइ ॥ १३८ ॥
 कहे जानन सुभारई औ पासाके संग ।
 दूरी नाम भवानिह जागु परब सब रंग ॥ १३९ ॥
 देसभार सुभारि भिले गौरी और मभार ।
 बाक गानिनी होति ई मानन सब संसार ॥ १४० ॥
 भैरव संभार सुनयो संगान्डी संभार ।
 भिले होत कीराहकी जानन सब संसार ॥ १४१ ॥
 संभार भगरी दूकरी असावरी भग इषाम ।
 बिले होत परासाकी नाम होई रस पाव ॥ १४२ ॥
 इषादिक गानन बिले यका श्रव पति राव ।
 गौरी सुन विमुद कहे ब्रं हरिहर अमुरान ॥ १४३ ॥
 अथ भद्रविद्यामाहात्म्यं लिख्यते ।
 भैरवकी अह और देव कहां सुहरन कव ।
 लख जाति लख तथा लखन कहां बिलि पाव ॥ १४४ ॥
 ऐश्वरी कारुण्यको कही भेदु सब पाव ।
 अह हिरौल दीपक कही भेन भीरव कमान ॥ १४५ ॥
 निजसंकेत सब भिले कोविद कहे विचार ।
 कही होत सबदेवता कहे राव सुभार ॥ १४६ ॥
 नीप मरुता ई सुनो अब सब बधुन विषाम ।
 गौरी सुन विमुद कहे ब्रं हरिहर अमुरान ॥ १४७ ॥

कही ओ संख्या कवण ही कहे व विस्मया ।
 कान भावकी भेद है नाहि शिखा पाव ॥ १४८ ॥
 अथ भैरवादि षट् रागात्म संभवार्थम् ।
 भैरवादि संभारो परमल ही अब नाम ।
 शिरी निधि सारके अंशने कहे छोरो लखाम ॥ १४९ ॥
 लखेदुव भैरव अयो मधम राव नर भाइ ।
 मालकीश सुनि निरभंते कलको सुरपुर अइ ॥ १५० ॥
 सुनि संभारके अंशने कयो हिरौल सकुण ।
 दीपक मध्यकतु कर्तौ दूजन परब अरुण ॥ १५१ ॥
 संभार सुन ई मेघ भीरान तिताको नाम ।
 पैकर भादि निपातको बंध कदुन सब नाम ॥ १५२ ॥
 ना रि ग म प य के गमैत कये वे पर राव ।
 नीप कदुता ई सुनो अब सब बधुन विषाम ॥ १५३ ॥
 अथ भैरवगाय ममानसहितारथार्थम् ।
 भैरवकी है मलयमा औ भैरवी भगरी ।
 मधुगावकी सिखाई वदरि संगान्डी पर नागि ॥ १५४ ॥
 षट षट नादि एक एककी तिलने पर एक एक ।
 षट मूष पति नामदुता परनी सहीत विवेक ॥ १५५ ॥
 अहि सहीत कही वदरि रंग औ भविष्यत ।
 रमे लीये षट नागी मूष परम लखाम ॥ १५६ ॥
 षट षट सुन भविष्यतिनी पर कि एक निन कही ।
 दे पर प्रासा पर कानि कही नाम ले कही ॥ १५७ ॥
 नीप इषाम कीदिक अनेकान सुइ हो राव ।
 कनर नार भैरव सुनन परने सहीत विषाम ॥ १५८ ॥
 अथ मालकीश राव ममानसहित कर्णन ।
 छोटी बाक संभारकी कदुन मुषकली गौरी ।
 मालकीशकी नाहि एक कला रागरी गौरी ॥ १५९ ॥

श्याम सुखी सुवर्ण नीलावली नखल ॥
 नीलगन्धम विद्यावती श्री बुनिया मो नाम ॥ १६० ॥
 श्याम सुख शीत वेदांग श्यामि जाल ॥
 शीत शीतल पर नाड सुत इन नामनि परिधान ॥ १६१ ॥
 कंधाल नाड कर स्याम ई शीतल मन्त्री परनाम ॥
 मालवतीय पर विदित ई परशिव पर नाम ॥ १६२ ॥

अथ द्विदोश्वरगणसमावहणवर्णनम् ।

गणपती देवाना परश्वती शीतल मन्त्र ॥
 शिवायाम विद्यावतशायि पर द्विदोश्वरी मय ॥ १६३ ॥
 शिवल बुनिया सुखी श्री मदीश्वरी मारी ॥
 देवनिरी केरी कडी पर सुवच विचारणी ॥ १६४ ॥
 मय श्याम माल्या शायना कलमनीय कन्याम ॥
 ई इमम कन्याम पर द्विदोश्व सुत परिधान ॥ १६५ ॥
 मन्त्रा शीतल शैव्य शयिनि द्विदोश्वरी पर नखल ॥
 मलि मन्त्रीकपुल मदा परशिवि य नाम ॥ १६६ ॥

अथ दीपक नाम समावहणवर्णनम् ।

देवी श्रीत कामोद् नर कपडी श्वर विचारणी ॥
 वेदांग श्री कन्या पर दीपकवी मारी ॥ १६७ ॥
 मन्त्रशाल कालम मन्त्रि अतीनी नाम ॥
 नीगच्छवी मन्त्रावती बुनिया मन्त्रावती नाम ॥ १६८ ॥
 एक इमम वेदांग श्री मन्त्रि कन्याम श्याम ॥
 वेदांग श्रीत कामोद् कडी श्याम शीतल जाल ॥ १६९ ॥
 ई श्वरगण मन्त्रि मन्त्रा नीगच्छ नाम मन्त्रा ॥
 नीगच्छावती मन्त्री सुत परशिवि सुत नाम ॥ १७० ॥

अथ शैव नाम समावहणवर्णनम् ।

ईश शीतली सुखी सुखावती महाश्री ॥
 देसकाल सुत नाम पर मय देव अकवारी ॥ १७१ ॥

देवी शैवी बुनिया मन्त्रावती श्याम मन्त्री ॥
 बुनिया शैवी केशवी श्वर शैवो मारी ॥ १७२ ॥
 मन्त्रि श्वर श्याम श्री कान्या सुत मन्त्रि ॥
 श्याम सिंधुवा वेदके य का सुत श्याम ॥ १७३ ॥
 गीता मन्त्रा मन्त्री कपडी मन्त्रावतीका मन्त्री ॥
 शैव मन्त्रि श्वरकडी मन्त्रि कन्याम विचारणी ॥ १७४ ॥

अथ शीतल नामावहणवर्णनम् ।

मन्त्रिनी कन्याम बुनि शायि कडी विचारणी ॥
 नखल मन्त्री अकवारी श्री शायवी मारी ॥ १७५ ॥
 श्वर विद्युत मन्त्रुनी श्वर मन्त्री नाम ॥
 शैवकडी शीतली कपडुनी पर नाम ॥ १७६ ॥
 शिवकामोद् अक शैव ई कामोद्नाड अक मय ॥
 मन्त्रावती श्री बुनिया श्याम श्री श्याम मय ॥ १७७ ॥
 शैव्य मन्त्रावति मन्त्रा मन्त्री शयिनि श्वरकडी ॥
 मन्त्रा ई शीतल मन्त्रि मन्त्रा देव मन्त्रि ॥ १७८ ॥

अथ नाम शयि नाम दिन क्नु विद्युत शायि
 मन्त्रा मन्त्रि श्वरकडी शयिनाम ॥

कपडुनि मन्त्रि कडी शयि श्री मन्त्रि मन्त्रि मय मन्त्रा ॥
 मन्त्रावती मन्त्रि मन्त्रा मय कपडु शयि मन्त्रा ॥ १७९ ॥
 मन्त्रि शीतल श्वर एक कडी शयिनि शयिनामो शायि ॥
 सुखर मन्त्रावती कपडु अक मन्त्रा श्री सुख मन्त्रि ॥ १८० ॥
 मन्त्रि मन्त्रावती सुखर मय मन्त्रि मन्त्रि शायी नाम ॥
 एक एक मन्त्रि शैव्य मन्त्रि शयि मन्त्रा ॥ १८१ ॥

आदि धारणें धारणी एक एक राज कराहि ।
आदि ओं धारि रैल दिन नौ समान धारणें ॥ १८२ ॥

इति श्रीमन्महाशारणाधिकार मानसिद्धिनीके
दुष्टप्रपणे श्रीपद्मनाभकेरी विरचिते

सुमनरागमाता ग्रंथ समाप्तः । संवत् १८६३ ॥

१८०५

१८२५

५७-



अथ स्वर—स्वरविषयकं ।

स्वर	वर्ण	विषय	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर
विद्य	५	३	५	५	५	३	५
स्वर	द्विधा	विधा	विषय	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर
विषय	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर
स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर
स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर

अथ सप्तस्वरयुक्तं ।

स्वर	वर्ण	विषय	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर
स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर
स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर
स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर	स्वर

सुख के लक्षण देवी कहिये, रैन सारणी लक्ष्मी ।
किलरु लक्ष्मी पावन से के लक्षण ज्येष्ठ कहिये ॥

२
अथ सामवेदशतकं ।

उपान	गुहा	सुहा
उपान	सुहा	सुहा
१	१	१
सर्वे सुहा सुहा उपान	सर्वे सुहा सुहा उपान	सर्वे सुहा सुहा उपान

अथ सृष्टीशतकं ।

सर्वे	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा
सर्वे सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा
सर्वे सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा
सर्वे सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा

३
अथ रूद्रादीशतकं ।

सर्वे	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा	सुहा
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

अथ श्रीशतकं ।

सर्वे	सुहा	सुहा
१	१	१
सर्वे सुहा	सुहा	सुहा
सर्वे सुहा		

अथ सुनीशतकं ।

सर्वे	सुहा	सुहा
१	१	१
सर्वे सुहा	सुहा	सुहा
सर्वे सुहा		

